IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भोपाल के इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में संग्रहीत पोखरण की टेराकोटा कला

Aadesh kumar pandey (Research Scholar)

Dr. Vijaya kumar ,Assistant Professor

Dyalbagh Educational Institute (Deemed to be University), Dayalbagh, Agra - 282005

Abstract

संसार में सर्वप्रथम मनुष्य ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए रेखाओं को माध्यम बनाया। रेखाओं की सहायता से मनुष्य ने भिन्न भिन्न भांति की आकृतियां बनाकर अपने मनोभाव को अपने निवास स्थान पर अंकित किया। प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य के द्वारा की गई इस प्रकार की चित्रकला को प्रागैतिहासिक कला का रूप माना जाता है। प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य ने गुफाओं में रहते हुए गुफाओं की दीवारों पर भांति-भांति के रेखा चित्र बनाए। प्रागैतिहासिक काल में बर्तन, मृण्मय मूर्तियां एवं अन्य टेराकोटा कलाकृतियों को टेराकोटा का प्रारंभिक बिन्दु माना गया है। सर्वप्रथम इन्हीं जगहों पर टेराकोटा का उपयोग आरंभ हुआ ऐसा विद्वानों का मत है।

पोखरण की टेराकोटा

पोखरण का टेराकोटा शिल्प विशेष अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में है। अनेक वर्षों से पोखरण के कलाकारों के द्वारा टेराकोटा कला का अभ्यास निरंतर जारी है। पोखरण परमाणु परीक्षण के अतिरिक्त यहां की प्रमुख टेराकोटा कला के लिए भी आकर्षण केंद्र बना हुआ है अर्थात पोखरण टेराकोटा कला के क्षेत्र में भी भारतवर्ष में विशेष स्थान रखता है पोखरण परमाणु शहर के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान जैसलमेर शहर से लगभग 110 किलोमीटर दूरी पर है यह कस्बा जोधपुर से जैसलमेर वाले मार्ग पर स्थित है।

पोखरण की टेराकोटा कला, कला का एक अनूठा रूप है जो भारत की अन्य टेराकोटा कला से पोखरण की टेराकोटा कला को पृथक करता है। पोखरण कस्बे के नजदीकी रिंद नामक स्थान से एक विशेष प्रकार की मिट्टी लाकर पोखरण के कुंभकार इस मिट्टी को गूंथ कर प्राचीन समय से टेराकोटा की विभिन्न प्रकार की घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाते थे। पोखरण में पिछले 50 वर्षों से भी अधिक समय से चली आ रही कुम्हारी कला वर्तमान में भारतवर्ष के अलावा अनेक अन्य देशों में भी अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं।

भारतवर्ष के इतिहास में हमें हड़प्पा के अत्यंत प्राचीनतम स्थलों पर मिट्टी के बने अनेक प्रकार के बर्तन, सिक्कों एवं अनेक प्रकार की अन्य वस्तुओं का एक विस्तृत संसार मिल जाता है। इसके साथ ही साथ ताम्र पाषाण युग मे भांति-भांति के टेराकोटा से बने हुए पात्रों एवं अनेक वस्तुएं प्राप्त होती है।

हड़प्पा के अतिरिक्त भी भारतवर्ष में विभिन्न स्थानों पर टेराकोटा की प्राचीनतम वस्तुऐं देखने को मिली हैं गंगा नदी घाटी के प्राचीन स्थलों से एक बहुत बड़ी संख्या में कला में बनी अनेक प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हुई है जो अत्यंत प्राचीन है। हड़प्पा कालीन स्थल की खुदाई से प्राप्त हुए टेराकोटा एवं गंगा घाटी के स्थलों की टेराकोटा कला की प्राचीनता को देखते हुए यह कह पाना बहुत आसान है कि भारतवर्ष में टेराकोटा कला का प्रचलन बहुत ही प्राचीन काल से होता आ रहा है। शुंग काल की बात करें तो इस काल में भी टेराकोटा मिट्टी से बने विभिन्न प्रकार के पात्र प्राप्त हुए तत्पश्चात कुषाण काल में भी टेराकोटा के विभिन्न प्रकार के फलकों का निर्माण हुआ परंतु शुंग काल के बने हुए टेराकोटा फलक अत्यधिक श्रेष्ठ थे। गुप्त शैली के टेराकोटा से बनीे टेराकोटा से निर्मित छोटे आकार की विभिन्न मूर्तियां भारतवर्ष के अनेक भागों में पाई जाती हैं। ताम्र पाषाण के आरंभिक समय से लेकर गुप्त काल के अंतिम चरण तक बंगाल में बांकुड़ा क्षेत्र अपने विशेष कार्य के लिए प्रसिद्ध है यहां पर टेराकोटा का कार्य प्राचीन काल से वर्तमान युग तक होता चला आ रहा है।

पोखरण परमाणु शहर के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान जैसलमेर सर से लगभग 110 किलोमीटर दूरी पर है यह कस्बा जोधपुर से जैसलमेर वाले मार्ग पर स्थित है। पोखरण कस्बे में एक सुंदर दुर्ग स्थापित है जिसको लाल पत्थर से बनाया गया है। पोखरण की समिति लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर सातलमेर है जिसे प्राचीन समय में पोखरण की राजधानी होने का वैभव प्राप्त था।

विषय एवं तकनीक

विषय एवं तकनीक की बात करें तो पोखरण कस्बे के नजदीक रिंद से लाई मिट्टी से कुंभकार टेराकोटा की वस्तुएं बनाते थे। नदी से मिट्टी लाकर पोखरण के कुंभकार इस मिट्टी को गूंथ कर इसे लचीला बनाते थे। जिसके बाद उन्हे आकार दिया जाता था। कुंभकार प्राचीन समय से टेराकोटा की विभिन्न प्रकार की घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाते थे। पोखरण में पिछले 50 वर्षों से भी अधिक समय से चली आ रही कुम्हारी कला वर्तमान में भारतवर्ष के अलावा अनेक अन्य देशों में भी अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। बर्तनों के साथ-साथ यहां टेराकोटा से बनी देव मूर्तियां एवं जानवर भी आकर्षण का केंद्र है। टेराकोटा से बनी में मूर्तियां एवं बर्तन पकाने के लिए पोखरण के कुंभकार जिस पारंपरिक तकनीकी का उपयोग करते हैं एक विशेष प्रकार की भट्टी होती है जिसे स्थानीय भाषा में लकड़ी का अवाड़ा बोलते हैं।

टेराकोटा से बनी वस्तुओं को विभिन्न तरीकों से तैयार किया जाता है इनमें से कुछ गेरूए एवं पीले रंग से अलंकृत किया जाता है एवं इनमें से कुछ पर खडिए के उपयोग से अलंकरण या रूपांकन किया जाता है। पोखरण की मिट्टी की विशेषता यह बताई जाती है कि यहां की लाल मिट्टी जब लकड़ी के अवाड़े में पकाई जाती है तब यह पकने के पश्चात लगभग गुलाबी रंग धारण कर लेती है। पोखरण के कुंभकारों के द्वारा बनाए जाने वाली टेराकोटा वस्तुओं में बड़बेड़ा, परात, चाड़ा, मटकी, खरज, पारा, पारोटी, कुलडी प्रमुख है। इसके साथ ही पोखरण के कुंभकार विभिन्न प्रकार की गुल्लक व जंगली पशु एवं पक्षियों की आकर्षक

आकृतियों का निर्माण करते हैं। यहां के कुंभकार के द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीकी में प्रयुक्त होने वाले औजारों में चॉक , धागा, थापा, कूंद, मंडाई, हाथरी, पिण्डी, टुलकिया, खुरपा आदि प्रमुख हैं।

पोखरण में दो प्रकार के मिट्टी के बर्तन बनते हैं। जिसमें कुशल कुम्हार जो अपनी कला में काफी अधिक ज्ञान रखते है एवं कलात्मक रूप से अधिक कौशल रखते हैं वह लोग टेराकोटा की अधिक कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करते हैं। इनके कौशल का अनुमान हम कुम्हारों द्वारा बनाई गई टेराकोटा वस्तुओं को देखने मात्र से लगा सकते हैं। इन टेराकोटा पात्रों या मूर्तियों में किया गया अलंकरण इतना वैभवशाली प्रतीत होता है जो पूर्णतः टेराकोटा को बाकी टेराकोटा कलाकृतियों से पृथक करता है।

दूसरी किस्म के टेराकोटा कम चमकीले और कम कलात्मक होते हैं जो साधारण तरीकों से निर्मित किए जाते हंै इन पात्रों एवं खिलौनों के निर्माण में वह कुम्हार कार्य करते हैं जो कलात्मक दृष्टि से कम कौशल रखते हैं। इन टेराकोटा की वस्तुओं में हमें चमक कम देखने को मिलती है एवं कलात्मक रुप से भी कुछ विशेष आकर्षण नहीं दिखाई देता है।

पोखरण की टेराकोटा कला पुराने समय से चली आ रही एक पारंपरिक कला है। जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलती आ रही है । पहले कुम्हार दैनिक उपयोग की वस्तुएं बनाते थे जिनमें कुल्हड़, मटका एवं पात्र इत्यादि प्रमुख थे। वर्तमान समय में मूर्तियों, खिलौनों के साथ ही घर की सजावट के लिए प्रयुक्त होने वाले फूलदान, पेन स्टैंड एवं अन्य अनेक प्रकार की टेराकोटा वस्तुओं का निर्माण होने लगा है ।

पोखरण में बनाए गए मिट्टी के बर्तनों में एक विशेष प्रकार की मजबूती देखने को मिलती है। पत्थर के समान मजबूत टेराकोटा की वस्तुओं का निर्माण यहां प्राचीन समय से चलता आ रहा है। यहां के कुम्हारों के द्वारा बनाए गए टेराकोटा के अनाज रखने के पात्र 3 पीढ़ियों तक सुरक्षित रहते थे। यह अदभुत मजबूती पोखरण के टेराकोटा को अन्य जगह की टेराकोटा से पृथक करती है।

<u>इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में पोखरण की टेराकोटा कला का संग्रह-</u>

पोखरण की कुम्हारी परंपराओं का इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के कुम्हार पारा में संग्रह सन् 1977 में स्थापित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल शहर में स्थित है। इस संग्रहालय में मानव सभ्यता के विकास क्रम को दर्शाया गया है यहां पर विभिन्न प्रकार की मुक्ताकाश प्रदर्शनियों का संग्रह देखने को मिलता है जिनमें जनजातीय आवास हिमालय आवास तटीय ग्राम, मरुग्राम एवं विभिन्न प्रकार की वीथियों, शैलाश्रयों एवं दीर्घाओं को प्रदर्शित किया गया है। मुक्ताकाश प्रदर्शनी भारत के कुछ विभिन्न क्षेत्रों की परंपराओं को संजोए हुए है जिनमें प्रमुख असम, लद्दाख, मणिपुर, तमिल नाडु, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल हंै। प्रदर्शनी का विशेष उद्देश्य पिछले अनेक दशकों से टेराकोटा एवं कुम्हारी कलाओं में हो रहे तकनीकी परिवर्तनों एवं उनकी परंपराओं के पहलुओं को संकलित एवं प्रदर्शित करना है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में कुम्हार पारा नामक मुक्ताकाश प्रदर्शनी पिछले 10 वर्ष से भारत के विभिन्न स्थानों की कुम्हारी परंपराओं के एक विशेष निचोड़ को अपने आप में संजोए हुए है यह प्रदर्शनी पिछले कुछ वर्षों में हुए विभिन्न प्रकार की कुम्हारी कार्यशाला एवं टेराकोटा कार्यशाला का परिणाम है। मुक्ताकाश प्रदर्शनी को आकर्षक बनाने के लिए भारत के विभिन्न क्षेत्रों से कौशल युक्त कुंभकारों को आमंत्रित किया गया जिनके कौशल के निपुण प्रदर्शन के परिणामस्वरूप यह मुक्ताकाश प्रदर्शनी अपने आप में विशेष आकर्षण संजोए हुए है।

प्रदर्शनी में पोखरण की टेराकोटा कला को पोखरण की कुम्हारी परंपराओं के नाम से प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में पोखरण से संकलित विभिन्न प्रकार की कुम्हारी के अतिरिक्त संग्रहालय में पोखरण के कुशल कुंभकारों की कुम्हारी कार्यशाला का प्रदर्शन है।

अध्ययन का उद्देश्य

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में रखी गई पोखरण की मृण्मय कला को प्रकाश में लाना प्रमुख उद्देश्य होगा।

टेराकोटा कला के क्षेत्र में पोखरण के विशेष स्थान को उजागर करना।

पोखरण में कार्य करने वाले कुंभकारो का भारतीय कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रकाश में आएगा।

निष्कर्ष

पोखरण की टेराकोटा कला का भारतीय टेराकोटा कला में विशेष स्थान है। पोखरण की टेराकोटा कला अपने भिन्न रंग एवं तकनीकि के कारण भी आकर्षक रही है। वर्तमान में देश एवं विदेश की बाजार में पोखरण की टेराकोटा कला जो स्थान बना पा रही है इसमें भारत सरकार का भी विशेष योगदान रहा है। अपना वर्चस्व खो रही पोखरण की टेराकोटा कला को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न तरह के प्रोत्साहन वर्धक कार्यक्रमों का आयोजन एवं आर्थिक सहयोग दिया जिसके उपरांत आज पोखरण की टेराकोटा कला को अंतराष्ट्रीय स्तर पर वर्चस्व स्थापित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Singh Uday,2020,Pokhran a novel

Srivastava B.B.,Technique And Art of Gupta Terracotta

Bhattacharya s.k., The history of Indian Art